झारखंड की पारंपरिक कला पर व्याख्यान, डॉ टीएन साहू ने कहा

कला है समुदाय की पहचान

लाइफ रिपोर्टर @ रांची

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र रांची क्षेत्रीय शाखा और रांची विवि के संयुक्त तत्वावधान में शुक्रवार को झारखंड की पारंपरिक कला पर व्याख्यान हुआ. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के मोरहाबादी स्थित कार्यालय में डॉ बच्चन कुमार ने कहा कि झारखंड की पारंपरिक कला का जड़ आदिवासी समुदाय है.

जनजातीय समुदाय की पीढ़ियों ने राज्य की संस्कृति को आकार दिया है. झारखंड की संस्कृति पर 30 आदिवासी समुदाय मुंडा, उरांव, असुर, संताल, बिरहोर आदि का प्रभाव है. जनजातीय और क्षेत्रीय भाषा विभाग के डॉ टीएन साहू ने कला की परिभाषा और उसके विभिन्न पहलुओं को बताया. किसी भी समुदाय की पहचान उसकी कला से भी होती है.

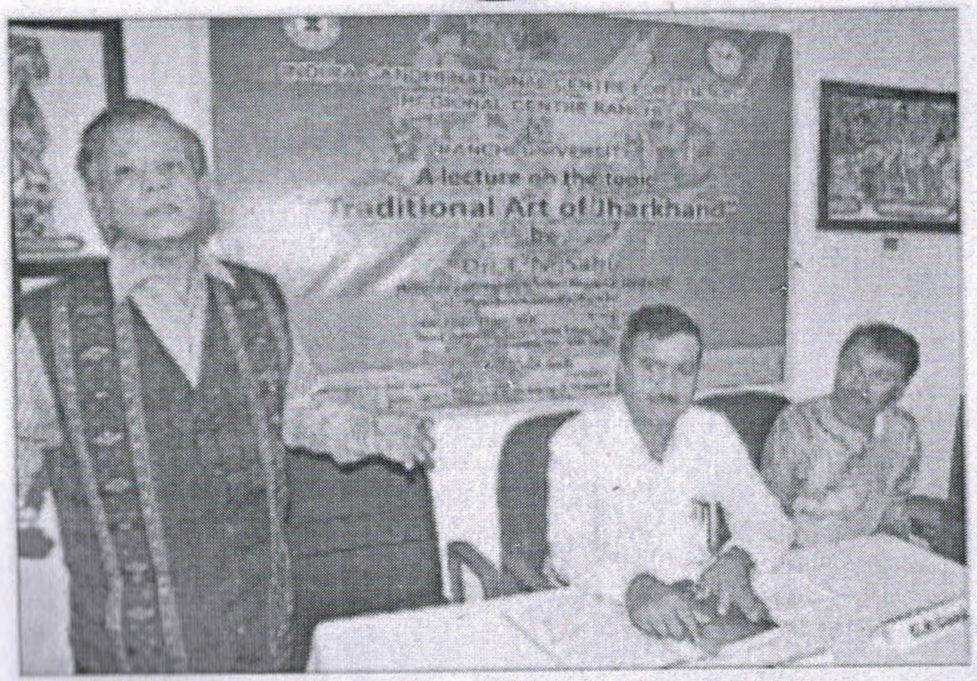

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के मोरहाबादी स्थित कार्यालय में विमर्श करते अतिथि.

कला से किसी समुदाय विशेष के अध्ययन में भी सहायता मिलती है. उन्होंने झारखंड की मिट्टी कला और पारंपरिक वेशभूषा के बारे में विस्तार से जानकारी दी. बांस बनने वाली चीजों के बारे में भी बताया. डॉ गिरिधारी राम गौंझू ने कहा कि झारखंड की पुरानी वस्तुओं और कला से जुड़ी सामग्रियों का डॉक्यूमेंटेशन होना चाहिए. इन्हें संरक्षित करना बहुत जरूरी है क्योंकि ये कला लुप्त होती जा रही है. पुराने समय में महिलाएं जो आभूषण धारण करती थी उनका अपना महत्व है. ये आभूषण नुकीले भी होते थे ताकि जरूरत पड़ने पर महिलाएं उसे हथियार के रूप में इस्तेमाल कर सके.

Sinha discusses Oral Tradition, historiography

PNS ■ RANCHI

There have been differences in the nature and quality as well as quantity of historical writings in different ages and among different peoples of the world. These differences have been often ascribed to the 'Historical consciousness' of a particular society said Dr. Rajiva Kumar Sinha, a professor in the Department of Ancient Indian History, Culture and Archaeology at TM Bhagalpur University during a programme organised on Monday by Indira Gandhi National Centre for the Arts, Regional Centre, Ranchi.

"The crux of the problem of Indian historiography thus lies in the absence of an organised system of recording. The same is true with the historiography of Jharkhand where majority of the population is still illiterate and where tribes still inhabit many parts. Absence of written records is thus quite natural. But as we all know 'being unwritten does not mean being unknown," added Sinha.

"The crux of the problem of Indian historiography thus lies in the absence of an organised system of recording. The same is true with the historiography of Jharkhand where majority of the population is still illiterate and where tribes still inhabit many parts. Absence of written records is thus quite natural. But as we all know 'being unwritten does not mean being unknown"

Pioneer Ranchi Edition-19 sept 2017

विमर्श

सेंट्रल लाइब्रेरी में प्रो राजीव सिन्हा ने कहा

लोककथा और कला का अध्ययन जरूरी

■ **झारखंड की मौखिक परंपरा और इतिहास लेखन: संथाल परगना क्षेत्र की लोककथाओं व लोककलाओं का मॉडल अध्ययन**

लाइफ रिपोर्टर @ रांची

life.ranchi@prabhatkhabar.in

कार्यक्रम में इतिहास लेखन पर हुआ विमर्श

टीएम भागलपुर विवि के एआइएचसी आर्कियोलॉजी विभाग के प्राध्यापक प्रो राजीव कुमार सिन्हा ने कहा कि विभिन्न युगों व लोगों के बीच ऐतिहासिक लेखन की प्रकृति, गुणवत्ता और परिणाम में भिन्नता रही है. इसका श्रेय अक्सर उस विशेष समाज की 'ऐतिहासिक चेतना' को दिया जाता है.

भारतीय संदर्भ में इतिहासकार यह मानते हैं कि यहां के इतिहास लेखन में ज्यादातर पश्चिम के प्रारूप व आदर्शों का अनुसरण किया गया है अथवा प्राचीन ग्रीस या चीन का मॉडल उधार लिया गया है. उन्होंने कहा कि भारतीयों ने स्वयं अपने शुरुआती साहित्य को श्रुति और स्मृति के रूप में वर्गीकृत किया है. इसलिए भारत पर लिखनेवाले इतिहासकारों के समक्ष पिछली घटनाओं के वास्तविक पुनर्निर्माण की समस्या है. अर्थात भारतीय इतिहास लेखन की समस्या की जड़ अभिलेखन (रिकॉर्डिंग) की एक सुव्यवस्थित प्रणाली की गैर मौजूदगी में निहित है. यह झारखंड की इतिहास के साथ भी है, जहां की अधिसंख्य जनसंख्या अभी भी अशिक्षित है और जहां विभिन्न हिस्सों में आदिवासी निवास करते हैं. इस संदर्भ में लिखित अभिलेखों की कमी स्वाभाविक है, पर 'अलिखित होने का अर्थ अज्ञात नहीं है'. इसलिए इस बात की आवश्यकता है कि प्राचीन साहित्यिक कार्यों, पुरातात्विक व पुरालेख सबूत, मध्यकालीन ऐतिहासिक कार्य और ब्रिटिश रिकॉर्ड व दस्तावेजों पर आधारित 'वाह्य इतिहास' के अतिरिक्त हमें लोककथा व लोक कला पर भी काम करना होगा. ऐतिहासिक चेतना ढूंढना होगा.

कार्यक्रम की अध्यक्षता रांची विवि में इतिहास विभाग के एचओडी डॉ अजय कुमार चट्टोराज ने की. इस मौके पर कल्चर आर्कियोलॉजी विभाग के डिप्टी डायरेक्टर डॉ एचपी सिंह, इंदिरा गांधी नेशनल सेंटर फॉर आर्ट्स, रीजनल सेंटर रांची के निदेशक डॉ बच्चन कुमार, डॉ गिरिधारी राम गौंझू, डॉ सुधा कुमारी, डॉ अजय कुमार, डॉ विनोद कुमार डॅ ऋतु कुमारी, मिनी कुमारी, राकेश पांडेय विद्यार्थी मौजूद थे. कार्यक्रम का संचालन प्रो कमल कुमार बोस ने किया.

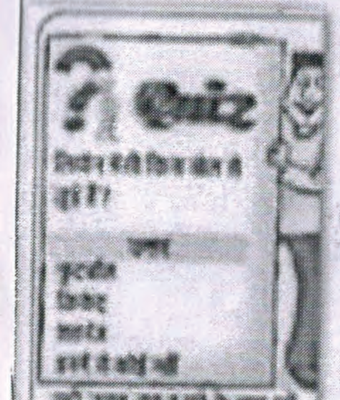

Quiz

विद्यार्थियों ने सीखा नागपुरी नृत्य कौशल

आड्रे हाउस में नागपुरी नृत्य पर कार्यशाला एवं नृत्य का प्रदर्शन

क्या आप जानते हैं?

मनरंजन

100 एपिसोड की सीरीज बनाएंगे राम माधवानी

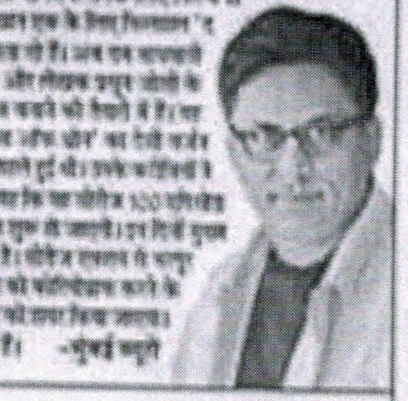

फिल्में नहीं, चमके सितारे

वाराणसी के आरंभ निर्देशित करेंगे 'मलंग'